ISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सीबीएसई) व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के परीक्षा परिणामों एवं मूल्यांकन पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन

1दिनेन्द्र दत्त यादव
1शोध छात्र, एन0ई0एफ0 विश्वविद्यालय आलो, अरुणांचल प्रदेश।

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

व्यक्ति एवं राष्ट्र के विकास हेतु शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। वास्तव में विश्व में घटित हो रही तमाम घटनाओं को व्यक्ति तभी समझ सकता है तथा अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकता है जब व्यक्ति स्वयं शिक्षित हो। शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिससे व्यक्ति व राष्ट्र संपूर्ण विश्व पर अपना दबदबा बना सकता है।

‘‘Education is the most powerfull weapon which you can use to change the world.

-Nalson Mandela

शिक्षा एक वैश्विक विषय के रूप में संपूर्ण विश्व में विद्यमान है। मार्च १९९० में एजूकेशन फार आल (सबके लिए शिक्षा) विषय पर संगोष्ठी में थाईलैंड में यह प्रण किया गया था कि 2000 तक संपूर्ण विश्व में सबके लिए शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया जाएगा।

विश्व में शिक्षा का प्रचार प्रसार तो अत्यंत विस्तृत स्तर पर किया जा रहा है। भारत भी प्रत्येक स्तर पर शिक्षा के उन्नयन व विकास हेतु तत्पर है।

सर्व शिक्षा अभियान, मध्यान्ह भोजन योजना इत्यादि शिक्षा के विस्तार हेतु किए गए विशेष प्रयास हैं जिनके द्वारा केन्द्र सरकार प्रत्येक राज्य सरकारें शत प्रतिशत शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में मुख्य रूप से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति व अंकों के विवरण पर अध्ययन किया गया है।

संकेतशब्द– केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सीबीएसई), उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के परीक्षा परिणाम, मूल्यांकन पद्धति, तुलनात्मक अध्ययन, शैक्षिक उपयोगिता।

ISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

परिचय

देश में माध्यमिक शिक्षा अथवा विद्यालयी शिक्षा के संचालन हेतु विभिन्न परिषद हैं, जिनसे मान्यता प्राप्त करने के उपरान्त ही विद्यालयी शिक्षा का कार्य सुचारू रूप से होता है। लगभग दो सौ वर्षों की ब्रिटिश दासता के उपरान्त मुक्त हुए स्वाधीन भारत द्वारा सर्व प्रथम दो प्रमुख कार्य किए गए। (१) शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन (२) शिक्षा के अवसरों का विस्तार।

उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न आयोगों, समितियों व नीतियों का निर्माण किया गया जो वास्तव में कारगर साबित हुआ। इसके उपरान्त वर्तमान में भारत में प्रत्येक छात्र व अभिभावकों के समक्ष अनेकों अनेक अवसर उपलब्ध हैं। छात्रों एवं अभिभावकों के लिए गुणात्मक शिक्षा वह शिक्षा व्यवस्था है– जिसके द्वारा छात्रों को पाठ्यक्रम के ज्ञान के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र का भी ज्ञान हो तथा उनके संपूर्ण व्यक्तित्व में शिक्षा सहायक हो। भारत के लगभग प्रत्येक राज्य में अपना स्वयं का लोकल बोर्ड है तथा ये सभी राजकीय बोर्ड भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं–

1. माध्यमिक शिक्षा परिषद बिहार
2. माध्यमिक शिक्षा परिषद आंध्र प्रदेश
3. माध्यमिक शिक्षा परिषद असम
4. माध्यमिक शिक्षा परिषद गुजरात
5. हरियाणा शिक्षा परिषद
6. माध्यमिक शिक्षा परिषद मध्य प्रदेश
7. माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश
8. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सीबीएसई)
9. इंडियन काउंसिल आफ सेकेन्ड्री एजूकेशन (आईसीएसई)
10. इंटरनेशनल बाकुलेर्ट आर्गेनाइजेशन (आईबीओएस)

भारत में राज्यों के केवल बोर्ड के अतिरिक्त अधिकांशतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सीबीएसई) इँडियन काउंसिल आफ सेकेन्ड्री एजूकेशन (आईसीएसई) के ही विद्यालय विद्यमान हैं।

उद्देश्य

किसी भी शोध कार्य को करने के पूर्व शोधकर्ता के समक्ष शोध से संबंधित उद्देश्य आवश्यक होता है जिससे वह शोध कार्य को तत्परता व लगनपूर्वक पूर्ण करने का प्रयास करता है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति का पता लगाना।

2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के परीक्षा परिणाम का पता लगाना।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं को प्रस्तुत किया गया–

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में परीक्षा परिणाम में सार्थक अंतर है।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति में सार्थक अंतर है।

संबंधित साहित्य

पूर्व में प्रस्तुत शोध समस्या से संबंधित शोध कार्यों का संक्षेप में उल्लेख किया गया है। वास्तव में प्रस्तुत शोध समस्या से संबंधित बहुत ही नगण्य कार्य हुए हैं। अतः कुछ सरकारी दस्तावेजों व रिपोर्टों के आधार पर अध्ययन का प्रयास किया गया।

- नवीं पंचवर्षीय योजना (1997–2002) के द्वारा शिक्षा के बदलते परिवेश पर सुझाव प्रस्तुत किए गए।
- 1999 में एनसीईआटी (राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद) द्वारा पाठ्यक्रम में विस्तृत रूप से बदलाव किए गए तथा बौद्धिक स्तर के कार्यों पर बल दिया गया।
- नवंबर 2000 में एऩसीईआरटी द्वारा एनसीएफएससी (नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क फार स्कूल एजूकेशन) की रिपोर्ट प्रकाशित की गई जिसमें विद्यालयों में पाठ्यक्रम का विस्तृत विवरण था।
- एनसीएफ (नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क) 2005 की रिपोर्ट में अभी तक का सबसे विस्तृत शैक्षिक पाठ्यक्रम उपलब्ध है। इसमें पाठ्यक्रम निर्माण के पांच प्रमुख सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं तथा मूल्यांकन व पाठ्यक्रम के महत्व का भी विस्तृत विवरण है।

शोध विधि

शोधकर्ता कार्य को करने हेतु जिस विधि का चयन करता है वही शोध विधि है। शोध विधियों में प्रमुख रूप से ऐतिहासिक वर्णान्तमक, प्रयोगात्मक, क्रियात्मक व तुलनात्मक इत्यादि है। शोधकत्री ने अपने इस शोध कार्य में वर्णानात्मक शोध विधि का प्रयोग करके जो परिणाम प्राप्त किए हैं उनकी वैधता की कसौटी के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।

न्यादर्श

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल जनपद कानपुर के 5 माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश व 5 केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों को चयनित किया गया है।
2. शोध अध्ययन में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के क्रमशः 125–125 छात्र छात्राएं अर्थात कुल 500 छात्र छात्राएं न्यादर्श के रूप में चयनित किए गए हैं।

ISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन तथा अज्ञात तत्व संकलित करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के कतिपय यंत्रों व उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन्हीं यंत्रों को उपकरण कहते हैं। शोधकत्री द्वारा साक्षात्कार में पूछे गए प्रश्नों के उतर व परीक्षा परिणामों के अंकपत्रों का सूक्ष्म अध्ययन, तालिका निर्माण द्वारा किया गया।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यकीय विधियां

न्यादर्श में कुल शिक्षकों के मध्यमान व मानक विचलन तथा प्रमाणिक त्रुटि व कान्तिक निष्पत्ति ज्ञात की गई है।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

तालिका संख्या –1

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के परीक्षा परिणाम का तुलनात्मक अध्ययन

क.सं.	क्षेत्र	N	M	S.D.	SED.	कान्तिक
01	केन्द्रीय माध्यमिक षिक्षा परिषद	125	81.76	13.83	2.54	4.46
02	उत्तर प्रदेष माध्यमिक षिक्षा परिषद	125	76.82	16.78		

तालिका संख्या–1 से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के परीक्षा परिणामों का परीक्षण करने के उपरान्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 81.76 व 76.82 और मानक विचलन क्रमशः 13.83 व 16.78 पाया गया। दोनों के मानों में अंतर पाया गया, यह अंतर सार्थक है अथवा नहीं के लिए क्रांतिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 2.54 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारिणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 से अधिक एवं 2.56 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के परीक्षा परिणामों में 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है।

तालिका संख्या –1 उत्तीर्ण (परीक्षा परिणाम प्रतिषत में)

क.सं.	क्षेत्र	2012	2013	2014	2015
01	केन्द्रीय माध्यमिक षिक्षा परिषद	98.65	98.40	98.31	96.29
02	उत्तर प्रदेष माध्यमिक षिक्षा परिषद	78.00	78.90	80.10	98.91

परिकल्पना संख्या–1

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में परीक्षा परिणाम में सार्थक अंतर है, सत्यापित की जाती है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद विद्यालयों के परीक्षा परिणामों में उत्तीर्ण छात्रों के प्रतिशत में ०.०५ स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। इसके कई कारण हो सकते हैं।

1. सीबीएसई व यूपी बोर्ड के विद्यालयों के परीक्षा परिणाम में उत्तीर्ण छात्रों एवं परीक्षा परिणाम के प्रतिशत के आधार पर यह स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा शिक्षा परिषदमें उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत अत्यंत कम है इसके अनेक कारण हो सकते हैं।

   अ) उत्तर प्रदेष माध्यमिक शिक्षा परिषद में प्रत्येक दो वर्ष में पाठ्यक्रम का बदलाव छात्रों के लिए परेशानी उत्पन्न कर रहा है। इसके अतिरिक्त सख्ती से अंकों का वितरण व शिक्षकों की एक मनोदशा से ग्रस्त होना ही यूपी बोर्ड के छात्रों के उत्तीर्ण प्रतिशत को कम कर रहा है।

   ब) सीबीएसई बोर्ड से संबद्ध केन्द्रीय जवाहर नवोदय विद्यालय देश के उच्च्व स्तरीय विद्यालय हैं। अतः इनका परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहता है जबकि उत्तर..... के विद्यालयों में छात्रों की पढ़ाई पर कम ध्यान देने के कारण भी ये परिणाम प्राप्त होते हैं।

   स) यद्यपि उत्तर प्रदेश में राजनैतिक हस्तक्षेप व अन्य दबाव के कारण परीक्षा परिणाम पिछले कुछ वर्षों में अच्छआ रहा है, बोर्ड की कापियां जांचने वाले शिक्षकों के गोपनीय साक्षात्कार द्वारा यह चौकाने वाले तथ्य सामने आए कि कुछ विशिष्ट पार्टियां जीत के लोभ के कारण, बोर्ड स्तर पर अधिक उत्तीर्ण परिणाम देने पर जोर देते हैं।

ISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

द) सीबीएसई बोर्ड के परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों पर अधिक बल दिया जाता है जबकि यूपी बोर्ड के परीक्षा में दीर्घ उत्तरीय पर। यूपी बोर्ड में छात्रों के साक्षात्कार द्वारा यह तथ्य सामने आए कि शिक्षक लंबे लंबे उत्तर देने व कापियां भरने पर जोर देते हैं।

ग्राफ संख्या–1

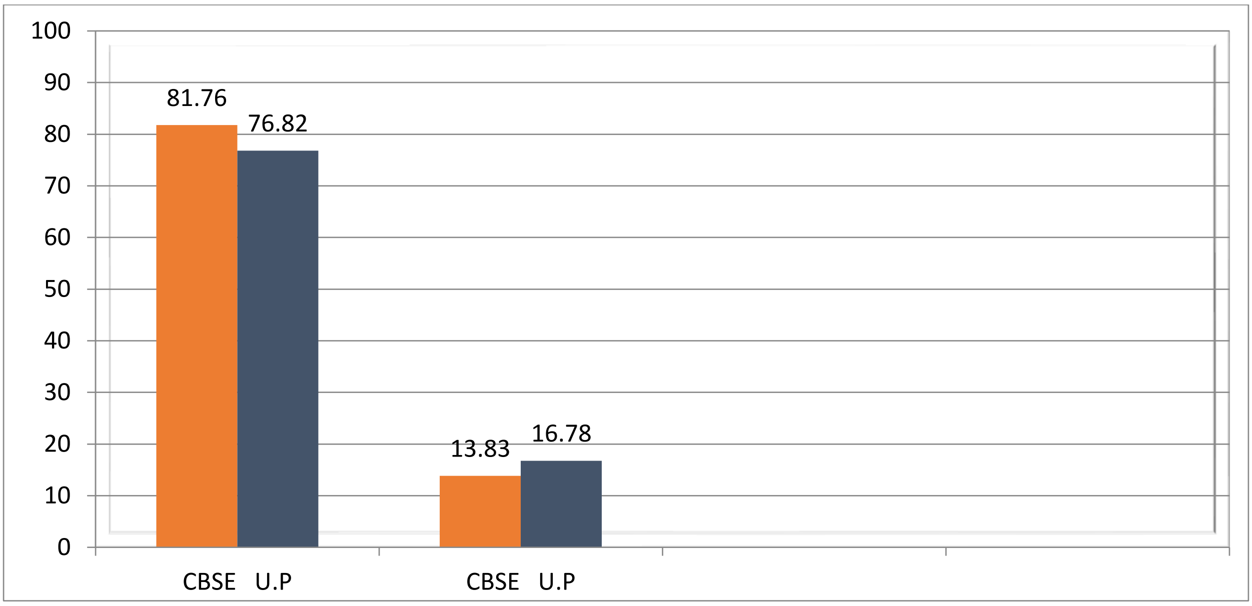

तालिका संख्या –2

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद

के विद्यालयों के अंकों के वितरण का तुलनात्मक अध्ययन

क.सं.	क्षेत्र	N	M	S.D.	SED.	कान्तिक
01	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद	125	82.85	16.69		2.85
02	उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद	125	76.85	16.78		

तालिका संख्या–2 से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के परीक्षा परिणामों का परीक्षण करने के उपरान्त प्राप्तांकों का

मध्यमान क्रमशः 82.85 व 76.82 और मानक विचलन क्रमशः 16.69 व 16.78 पाया गया। दोनों के मानों में अंतर पाया गया, यह अंतर सार्थक है अथवा नहीं के लिए क्रांतिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 2.85 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारिणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 से अधिक एवं 2.56 से अधिक पाया गया। अतः इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के अंकों के वितरण में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गय।

अतः परिकल्पना संख्या–२ केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद में अंकों के मूल्यांकन पद्धति में सार्थक अंतर है–स्वीकृत की जाती है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में मूल्यांकन पद्धति में ०.०१ स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। इसके कई कारण हो सकते हैं।

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति के परीक्षण हेतु संबंधित विद्यालयों की अंक तालिका एवं शिक्षकों के साक्षात्कार द्वारा यह बात संज्ञान में आई कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद में मूल्यांकन का आधार अंक ही होते हैं किन्तु अंकों को ग्रेड के रूप में प्रदान किया जाता है। जैसे– ए, बी, सी, डी, ई... जबकि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद में मूल्यांकन हेतु अंक ही प्रदान किए जाते हैं, ग्रेड प्रदान करने का कोई नियम नहीं है।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाओं व विद्यालय की आंतरिक गतिविधियों के प्रदर्शन के आधार पर संपूर्ण रूप से मूल्यांकन किया जाता है जबकि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में पाठ्यक्रम से संबंधित मुख्य विषयों पर ही प्रमुख रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाता है।
3. मूल्यांकन पद्धति के आधार पर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालय उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों की तुलना अधिक बेहतर स्थिति मे पाए गए।
4. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद से संबद्ध विद्यालयों में छात्रों के ज्ञान, अवबोध, चिन्तन शक्ति, व्यक्तित्व, तर्क शक्ति, रुचि, भविष्य के अवसरों में सफलता प्रतिशत इत्यादि सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन किया जाता है जबकि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के छात्र किताबी ज्ञान तक ही सीमित होते हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में परीक्षा परिणाम में 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।

शैक्षिक उपयोगिता

किसी भी राष्ट्र के उत्थान में विद्यालयी शिक्षा का विशेष योगदान होता है। स्वतंत्रता के उपरान्त भारत मे अनेक राज्य स्तरीय बोर्ड व माध्यमिक केन्द्रीय शिक्षा परिषद का गठन हुआ। अतः यह शोध प्रपत्र मुख्य रूप से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के परीक्षा परिणाम व मूल्यांकन पद्धति के तुलनात्मक अध्ययन से प्रस्तुत करता है।

बालकों की शिक्षा व शिक्षा के साथ ही मूल्यांकन का सही दिशा व रीति से किया जाना कहीं अधिक आवश्यक है। आज के प्रतियोगी युग में प्रत्येक वस्तु के अनेक विकल्प उपस्थित हैं। अतः ऐसी स्थिति में यह प्रपत्र छात्रों व अभिभावकों को विद्यालय के चुनाव में सहायक सिद्ध होगा तथा शोध द्वारा संबंधित विद्यालयों से संबद्ध परिषदों में व्याप्त मूल्यांकन पद्धति कमियों को उजागर करने का प्रयास किया गया है जो मूल्यांकन पद्धति को राज्य सरकार को शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन दिशा प्रदान करेगा।

शोधकारी द्वारा किए गए शोध कार्य को अध्ययन, अनुभव, साक्षात्कार व अथक प्रयासों के आधार पर क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। अनुसंधान एक ऐसी सतत् प्रक्रिया है जिसके माध्यम से भावी पीढ़ी का भविष्य निर्माण किया जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. **'मोनल जे.एस (1964)–इंडियन साइंस आफ एजूकेशन रिसर्च',** यूरेशिया पब्लिसिंग हाउस आफ प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ–159
2. **'शर्मा आर.ए. और शिक्षा चतुर्वेदी (1994)–निर्देशन तथा परामर्श',** सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, पृष्ठ–192–193
3. **'सिंह कर्ण (1946)–भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं'** गोविन्द्र प्रकाशन लखीमपुर खीरी, पृष्ठ–201
4. **'रामकृष्ण नैया डी. (1980) द्वारा एम.वी. बुच, थर्ड सर्वे रिसर्च इन एजूकेशन',** एन.सी.ई.आर.टी. , नई दिल्ली
5. सीबीएसई विद्यालयों की मूल्यांकन पद्धति की जानकारी, विद्यालय में उपलब्ध अंक पत्रों द्वारा
6. परीक्षा परिणाम का इंटरनेट के माध्यम से विश्लेषण
7. विद्यालयों (सीबीएसई व यूपी बोर्ड) में उपलब्ध छात्रों के अंक पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन